डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस. आर. ए. पी. कॉलेज,
बारा चकिया।

B.A. Part – I
हिन्दी प्रतिष्ठा
Paper – I

Date :– 18-02-2022

कबीरदास का भक्ति-पद (भाग-4)

कामी क्रोधी लालची,
इतने भक्ति न होय।
भक्ति करै कोई सूरमा,
जाति बरन कुल खोय॥

भावार्थ :–
विषय वासना में लिप्त रहने वाले, क्रोधी स्वभाव वाले तथा लालची प्रवृत्ति के प्राणियों से भक्ति नहीं होती। धन संग्रह करना, दान-पुण्य न करना ये तत्व भक्ति से दूर ले जाते हैं। भक्ति वही कर सकता है जो अपने कुल, परिवार, जाति तथा अहंकार का त्याग करके पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास से कोई पुरुषार्थी ही कर सकता है। ये हर किसी के लिए संभव नहीं है।

जल ज्यों प्यारा माछरी,
लोभी प्यारा दाम।
माता प्यारा बारका,
भगति प्यारा नाम॥

भावार्थ :–
मछली को जल अत्यधिक प्रिय होता है, लोभी को धन संपत्ति बहुत प्यारी

Scanned by CamScanner

होती है और माता को पुत्र अधिक प्रिय होता है। इसी प्रकार भक्तों को भी प्रभु के नाम का स्मरण सर्वाधिक प्रिय होता है।

Scanned by CamScanner